तर्ज--सुहानी चांदनी रातें

धनी मिलकर बिछड़ जाना, जुदाई अब नही भाती
ये आह तेरी विरहन की, सुनी अब क्यों नही जाती

1--कभी बृज रास मे मिलकर,
धनी हम तुमसे बिछड़े थे
प्रेम था लक्ष्य बिन, मुंह से उथले बोल निकले थे
अब आई जागनी, सुख अर्स के लेना है चाहती

2--बहुत अर्जी करी चरणो में,
तेरे अब धनी सुन लो
हंसी जो धाम मे होगी, पिया अब खेल खत्म कर दो
धनी मेरे तेरी अंगना, यहां रहना नही चाहती

3--कभी एक पल जुदा होते ना थे,
हम तुमसे खिलवत में
पूरी पहचान करके, क्यूं भूल जाते है गफलत में
उठा लो पर्दा फरामोसी, ये दुनिया अब नही भाती

Nijanand App